अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) ''बैठने के लिए'' प्राकृत भाषा में धातु है-
(क) उट्ठ (ख) लिट्ठ
(ग) अच्छ (घ) तिष्ठ (ग)

(b) 'दया + ऊण' का सन्धि होकर बनता है-
(क) दयौण (ख) दयेण
(ग) दयैण (घ) दयौण (क/घ दोनो सही माने)

(c) 'अम्ह' सर्वनाम का चतुर्थी एकवचन का रूप नहीं है-
(क) ममए (ख) मम
(ग) मह (घ) मज्झ (क)

(d) 'गुरु + उवदेसा' का सन्धि करके शब्द बनता है-
(क) गुरोवदेस (ख) गुरुवदेस
(ग) गुरेवदेस (घ) गुरवदेस (ख)

(e) वैक्रिय मिश्र काय योग में समुच्चय बंध योग्य प्रकृतियाँ हैं-
(क) 102 (ख) 101
(ग) 112 (घ) 114 (क)

(f) परिहार विशुद्धि चारित्र में समुच्चय बंध योग्य प्रकृतियाँ हैं-
(क) 63 (ख) 65
(ग) 74 (घ) 101 (ख)

(g) आहारक द्विक का बंध है-
(क) कषाय सापेक्ष (ख) मिथ्यात्व सापेक्ष
(ग) संयम सापेक्ष (घ) सम्यक्त्व सापेक्ष (ग)

(h) घृणा उत्पादक कर्म है-
(क) शोक (ख) भय
(ग) जुगुप्सा (घ) उष्ण (ग)

(i) संहनन नहीं है-
(क) नाराच (ख) सेवार्त्त
(ग) कीलिका (घ) हुण्डक (घ)

(j) प्रत्येक प्रकृति है-
(क) निर्माण (ख) स्थिर
(ग) सुभग (घ) श्वेत वर्ण (क)

(k) किस दिशा में रहे अत्म प्रदेशों द्वारा कर्म स्कन्धों का ग्रहण होता है-
(क) ऊर्ध्व दिशा (ख) अधो दिशा
(ग) विदिशा (घ) सभी दिशा (घ)

(l) जिन भगवान में परीषह संभव है-
(क) 22 (ख) 21
(ग) 11 (घ) कोई नहीं (ग)

(m) रौद्र ध्यान का भेद नहीं है-
(क) हिंसानुबंधी (ख) मृषानुबंधी
(ग) स्तेयानुबंधी (घ) परिग्रहानुबंधी (घ)

(n) अनुयोग का सार है-
(क) आचार (ख) निर्वाण
(ग) अव्याबाध सुख (घ) प्ररूपणा (घ)

(o) भाव शस्त्र नहीं है-
(क) काम (ख) क्रोध
(ग) तोप (घ) मद (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) सम्बन्ध का बोध कराने के लिए सप्तमी विभक्ति होती है। (नहीं)

(b) 'अ या आ' वर्ण के बाद 'इ' वर्ण हो तो 'इ' का 'ए' हो जाता है। (हाँ)

(c) जिस लेश्या में जीव काल करता है, उसी लेश्या में जीव उत्पन्न होता है। (हाँ)

(d) कर्मग्रन्थकार अवधिदर्शन को विभंग ज्ञान के साथ ही मानते हैं। (नहीं)

(e) मनुष्य लब्धि अपर्याप्त जीव भी जिन नाम कर्म का बंधक होता है। (नहीं)

(f) बेइन्द्रिय में दूसरा गुणस्थान अपर्याप्त अवस्था में होता है। (हाँ)

(g) हाथी और कुंथु का जीव समान प्रदेश परिमाण वाला है। (हाँ)

(h) पात्र को ज्ञानादि सद्गुण प्रदान करना आकिंचन्य है। (नहीं)

(i) ज्ञानावरणीय के निमित्त से आक्रोश तथा याचना परीषह होते हैं। (नहीं)

(j) नवदीक्षित अध्ययनशील साधु ग्लान कहलाता है। (नहीं)

(k) इसमें ज्ञान आदि आचारों की उत्पत्ति होती है, अतः आचारांग सूत्र अंग है। (नहीं)

(l) आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन का नाम लोक विजय है। (नहीं)

(m) लोकसार अध्ययन का दूसरा नाम आवंति अध्ययन भी है। (हाँ)

(n) महापरिज्ञा नामक अध्ययन वर्तमान काल में उपलब्ध नहीं है। (हाँ)

(o) आचारांग में मुख्य रूप से मूल्यात्मक चेतना की सबल अभिव्यक्ति हुई है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	यति धर्म	(क) बकुश	शौच
(b)	समिति	(ख) अनुभाव	उत्सर्ग
(c)	परीषह	(ग) शौच	नग्नत्व
(d)	निर्ग्रन्थ	(घ) सामायिक	बकुश
(e)	भाव	(च) अनन्तानुबंधी	औदयिक
(f)	बन्ध	(छ) उत्सर्ग	अनुभाव
(g)	नोकषाय	(ज) खट्टा	भय
(h)	चारित्र	(झ) नग्नत्व	सामायिक
(i)	तप	(य) सादि	विविक्त शय्यासन
(j)	प्रायश्चित्त	(र) औदयिक	परिहार
(k)	स्वाध्याय	(ल) भय	आम्नाय
(l)	रौद्रध्यानी	(व) विविक्त शय्यासन	अनन्तानुबंधी
(m)	पुण्य प्रकृति	(क्ष) परिहार	साता वेदनीय
(n)	रस	(त्र) आम्नाय	खट्टा
(o)	संस्थान	(ज्ञ) साता वेदनीय	सादि

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a) मैं किन्ही भी दो अव्यय पदों में सन्धि कार्य करती हूँ। अव्यय सन्धि

(b) मैं 'इम' सर्वनाम की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन का एकमात्र रूप हूँ। इमे

(c) मैं उत्पन्न होते, आयुबंध करते तथा काल करते समय मिथ्यादृष्टि होता हूँ। 7वीं नारकी

(d) मुझमें एक चौथा ही गुणस्थान है और मैं 72 प्रकृतियों का बंध कर सकता हूँ। 5 अनुत्तर विमान

(e) मैं अरूपी एवं इन्द्रियातीत हूँ, मुझे हथेली पर रखे आँवले की तरह नहीं देख सकते हैं। जीव

(f) यदि पूर्वजों की मिथ्या मान्यता को नहीं छोड़ोगे तो मेरी तरह पश्चात्ताप करना पड़ेगा। लोहवणिक्

(g) मैंने अपने पति को बेले के पारणे के समय भोजन में विष खिला दिया। रानी सूर्यकांता

(h) मैं शीतल शरीर में शीत प्रकाश का नियामक कर्म हूँ। उद्योत

(i) मैं सत्य, हितकारी, परिमित एवं संदेह रहित भाषा बोलने वाली समिति हूँ। भाषा समिति

(j) मैं आचार का सार हूँ। अनुयोग

(k) मेरा अर्थ है किसी वस्तु पर लगे मैल को दूर करके उसे स्वच्छ बना देना। धूत

(l) मुझमें भगवान महावीर की साधना का वर्णन है, मैं पूरा गाथात्मक अध्ययन हूँ। उपधान श्रुत

(m) मैं वास्तविक स्व-अस्तित्व का विस्मरण हूँ। मूर्च्छा

(n) मैं मिथ्यात्व अज्ञान रूप मोह निद्रा से व्यामोहित हूँ। भाव सुप्त

(o) सांख्य दर्शन में मेरे लिए पुरुष शब्द प्रयोग हुआ है। आत्मा

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) अव्यय किसे कहते हैं ?

उ. ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई परिवर्तन न हो और जो सदा एक से रहे अर्थात् सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगों में एक समान रहे, वे अव्यय कहलाते हैं।

(b) प्रथम नारकी के दूसरे से तीसरे गुणस्थान में कम होने वाली 26 प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. 25-50 अणमज्झ से नराउ तक (26) समुच्चय बन्ध स्वामित्व में तीसरे गुणस्थान में छूटी हुई में देवायु पहले छूट गयी, शेष 26 प्रकृति कम हुई।

(c) तेजो लेश्या के समुच्चय बंध स्वामित्व में नहीं बंधने वाली प्रकृतियाँ लिखिए।

उ. नरकत्रिक, सूक्ष्मत्रिक और विकलत्रिक = 9

(d) क्षमा की साधना के कोई दो उपाय लिखिए।

उ. नोटः- इन पाँच में से कोई दो मान्य-

1. अपने में क्रोध के निमित्त के होने या न होने का चिन्तन करना।
2. क्रोधवृत्ति के दोषों का विचार करना।
3. बाल-स्वभाव का विचार करना।
4. अपने किए हुए कर्म के परिणाम का विचार करना।
5. क्षमा के गुणों का चिन्तन करना।

(e) निष्कर्मदर्शी के कोई दो अर्थ लिखिए।

उ. नोटः- इन चार से कोई दो मान्य-

1.कर्म रहित शुद्धि आत्मदर्शी।

2. राग-द्वेष के सर्वथा छिन्न होने से सर्वदर्शी।

3. कर्मों के व्यापार के सर्वथा नहीं होने से अक्रिया दर्शी।

4. जहाँ कर्मों का सर्वथा अभाव है, ऐसे मोक्ष का दृष्टा।

(f) हंतव्वा और अज्जावेतव्वा का अर्थ लिखिए।

उ. हंतव्वा- चाबुक आदि से मारना।

अज्जावेतव्वा— जबरन आदेश का पालन कराना

(g) काल क्षण और भाव क्षण का अर्थ लिखिए।

उ. काल क्षण- धर्माचरण का समय

भाव क्षण- उपशमादि उत्तम भावों की प्राप्ति।

(h) प्रथम नारकी के दूसरे गुणस्थान में नहीं बंधने (छूटने)वाली चार प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. नपुंसक वेद, मिथ्यात्व मोहनीय, हुण्डक संस्थान, सेवार्त्तक संहनन

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : -(कोई आठ) 8x3=(24)

(a) तेउकाय, वायुकाय जिन 15 प्रकृतियों को स्वभाव से नहीं बांधतें हैं, उनके नाम लिखिए।

1. तीर्थंकरनामकर्म	2.देवगति	3.देव आनुपूर्वी	4. वैक्रिय शरीर
5.वैक्रिय अंगोपांग	6.आहारक शरीर	7.आहारक अंगोपांग	8. देवायु
9.नरकगति	10.नरक-आनुपूर्वी	11.नरक आयु	12.मनुष्यायु
13. मनुष्य गति	14.मनुष्यानुपूर्वी	15. उच्चगोत्र।	

(b) कार्मण काय योग का सम्पूर्ण बंध स्वामित्व लिखिए।

गुणस्थान	संख्या	प्रकृति नम्बर	गाथा के शब्द	प्रकृतियाँ
समुच्चय बन्ध	112	(6-11, 49-50)	आहार से नरय तक, तिरि नराउ (8)को छोड़कर	
1	107	(1-5)	जिण से विउ (5) तक को छोड़कर	
2	94	औदारिक मिश्र काययोग के समान, किन्तु देवता नरक के अपर्याप्त में भी		
4	75	कार्मण काययोग होने से चौथे गुणस्थान में मनुष्य सम्बन्धी पाँच प्रकृतियों का बन्ध भी सम्भव है।		
13	1	साता वेदनीय का बंध		

(c) छद्मस्थ जीव किन 10 वस्तुओं को नहीं देख पाते हैं ?

1. धर्मास्तिकाय	2. अधर्मास्तिकाय	3. आकाशास्तिकाय	4. अशरीरी जीव
5. परमाणु पुद्गल	6. शब्द	7. गन्ध	8. वायु

9. यह जिन (घातीकर्म क्षय करने वाला) होगा अथवा नहीं,

10. यह समस्त दुःखों का अन्त करेगा अथवा नहीं।

(d) नरक में उत्पन्न नारकी जीव की इच्छा होते हुए भी मनुष्य लोक मे नहीं आने के कोई तीन कारण लिखिए।

नोटः इन चार में से कोई तीन कारण मान्य-

1. नरक गति में अत्यन्त तीव्र वेदना का वेदन करने से।

2.परमाधार्मिक नरकपालों द्वारा बार-बार ताड़ित-प्रताड़ित किये जाने से।

3. नरक गति सम्बन्धी असाता वेदनीय कर्म के क्षय नहीं होने से।

4.नरक गति सम्बन्धी आयुकर्म के क्षय नहीं होने से।

(e) आर्त्तध्यान किसे कहते हैं ? उसके भेदों का उल्लेख कीजिए।

अर्ति का अर्थ है पीड़ा या दुःख। अतः पीड़ा या दुःख से उत्पन्न होने वाला ध्यान आर्तध्यान है। इसके

चार भेद हैं-

1. अनिष्ट संयोग आर्तध्यान
2. इष्टवियोग आर्तध्यान
3. रोग चिन्ता आर्तध्यान
4. निदान आर्तध्यान

(f) 18 भाव दिशाओं के नाम लिखिए।

मनुष्य की चार - सम्मूर्च्छिम, कर्म भूमि, अकर्म भूमि, अन्तर्द्वीप।

तिर्यञ्च की चार— बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

स्थावर की चार— पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय।

वनस्पति की चार— अग्रबीज, मूलबीज, स्कन्ध बीज, पर्वबीज। ये 16 + नारकी + देवता = 18

(g) आत्मा को जानने के तीन साधन बताइए।

1. पूर्वजन्म की स्मृति रूप जातिस्मरण ज्ञान तथा अवधिज्ञान आदि ज्ञान होने पर स्वमति से।
2. तीर्थंकर, केवली आदि का प्रवचन सुनकर।
3. तीर्थंकर के प्रवचनानुसार उपदेश करने वाले विशिष्ट ज्ञानी के निकट में उपदेश आदि सुनकर।

(h) इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्जेण बज्झतो ?
जुद्धारिहं खलु दुल्लभं। इस सूत्र का अर्थ लिखिए।

इसी के (अपनी आत्मा) के साथ युद्ध कर, दूसरों के साथ युद्ध करने में तुझे क्या मिलेगा? युद्ध के योग्य साधन अवश्य ही दुर्लभ हैं।

(i) मनुष्य द्वारा कर्म समारंभ के कोई चार हेतु लिखिए।

नोटः- इन आठ में से कोई चार मान्य

1. अपने इस जीवन के लिए
2. प्रशंसा व यश के लिए
3. सम्मान की प्राप्ति के लिए
4. पूजा आदि पाने के लिए
5. सन्तानादि के जन्म या अपने जन्म दिवस पर
6. मृत्यु सम्बन्धी कारणों व प्रसंगों पर
7. मुक्ति की प्रेरणा या लालसा से
8. दुःख के प्रतिकार के लिए अर्थात् रोग, आतंक, उपद्रव आदि मिटाने के लिए।

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) निर्वाण का सार क्या है -

(क) अनन्त ज्ञान (ख) अनन्त दर्शन

(ग) अव्याबाध सुख (घ) वीतरागता (ग)

(b) ''आगार'' का मूल नाम क्या है-

(क) आचारांग (ख) प्रज्ञापना

(ग) भगवती (घ) अंतगढ़ (क)

(c) आचारांग सूत्र के उद्देश्क कितने हैं-

(क) 80 (ख) 82

(ग) 85 (घ) 88 (ग)

(d) जितशत्रु किस नगरी का अधिपति था -

(क) श्वेताम्बिका (ख) द्वारिका

(ग) श्रावस्ती (घ) हस्तिनापुर (ग)

(e) बंध के कितने प्रकार हैं -

(क) 12 (ख) 16

(ग) 08 (घ) 04 (घ)

(f) आत्म-विस्मण को कहते हैं-

(क) आलस्य (ख) कामचोर

(ग) प्रमाद (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(g) सातवीं नरक में समुच्चय बंध कितनी प्रकृतियों का होता है-

(क) 101 (ख) 100

(ग) 98 (घ) 99 (घ)

(h) ''जिननाम कर्म'' प्रकृति का बंध कौनसे गुणस्थान से प्रारम्भ होता है-

(क) 4 (ख) 5

(ग) 6 (घ) 7 (क)

(i) कर्मग्रन्थ की अपेक्षा तेउकाय, वायुकाय में कितने गुणस्थान होते हैं-

(क) 1 (ख) 2

(ग) 3 (घ) 4 (क)

(j) ''हो'' शब्द का अर्थ होता है -

(क) बैठना (ख) होना

(ग) सुनना (घ) पालना (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) संज्ञा का अर्थ 'चेतना' होता है। (हाँ)

(b) जो कर्मरहित शुद्ध आत्मदर्शी है, वह निष्कर्मदर्शी है। (हाँ)

(c) सूर्याभ विमान में राजा प्रदेशी का जीव उत्पन्न हुआ। (हाँ)

(d) आत्मा को केवलज्ञानी देख सकते हैं। (हाँ)

(e) 'घृणा' खत्म करने वाला कर्म जुगुप्सा नहीं है। (हाँ)

(f) अबाधाकाल पूर्ण नहीं होने पर भी अनुभाव फल देता है। (नहीं)

(g) चित्त में मृदुता और व्यवहार में विनम्रता का होना 'आर्जव' है। (नहीं)

(h) वैक्रिय मिश्र काययोग में आयुष्य का बंध नहीं होता है। (हाँ)

(i) तेउकाय, वायुकाय उच्च गोत्र को नहीं बांधते हैं। (हाँ)

(j) अभवी में गुणस्थान पहला ही नहीं होता है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं सम्बन्ध का बोध कराती हूँ।	षष्ठी विभक्ति
(b)	मैं संधि का दूसरा प्रकार हूँ।	लोप विधान सन्धि
(c)	मैं संयम सापेक्ष प्रकृति हूँ।	आहारकदिक
(d)	मेरे द्वारा एकाग्रतापूर्वक शरीर और वचन के व्यापार को छोड़ा जाता है।	व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त
(e)	मैं पाँच इन्द्रियों के विषयों की उत्पत्ति का मुख्य साधन हूँ।	वनस्पति
(f)	मैं शब्दों व रूपों में अनासक्त रहता था।	महावीर
(g)	मैं दुःख का मूल कारण हूँ।	कषाय
(h)	मेरे पुत्र का नाम 'सूर्यकान्त' था।	सूर्यकान्ता
(i)	मैं आकाशास्तिकाय आदि को भी देख सकता हूँ।	केवलज्ञानी
(j)	मैंने अपने पति को विष देकर मार डाला।	सूर्यकांता रानी

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) ''आयार'' व ''आचाल'' शब्द को परिभाषित कीजिए।

उ. आयार- यह आचरणीय का प्रतिपादन करने वाला है, एतदर्थ आचार है।

आचाल- यह निविड़ बंध को आचालित (चलित) करता है, अतः आचाल है।

(b) आचारांग के द्वितीय अध्ययन का सार लिखिए।

उ. दूसरे 'लोकविजय' नामक अध्ययन में 6 उद्देशक हैं। लोकविजय का अर्थ है- लोक अर्थात् संसार पर विजय। लोक दो प्रकार का है- द्रव्य लोक और भावलोक।

(c) आचार्य शीलांक ने ''मोहजन्य परीषह'' की क्या व्याख्या की है ?

उ. संयम आदि गुण युक्त साधु के समक्ष यदि कभी मोहजन्य परीषह अथवा उपसर्ग उत्पन्न हो जाय तो उसे चाहिये कि वह उन्हें दृढ़ता के साथ समीचीन रूपेण सहन करे।

(d) आचारांग सूत्र में आठवाँ अध्ययन विमोह क्यों रखा ?

उ. आठवें अध्ययन के मध्य में '' इच्चेयं विमोहाययणं'' तथा अणुपुव्वेण विमोहाइं'' और अन्त में विमोहन्नयरं हियं'' इन पदों में 'विमोह' शब्द का प्रयोग होने के कारण सम्भवतः इस अध्ययन का नाम विमोह अध्ययन रखा गया है।

(e) आत्मा को जानने के तीन साधन में से कोई दो साधन लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो साधन-

1. पूर्वजन्म की स्मृति जातिस्मरण ज्ञान तथा अवधिज्ञान आदि ज्ञान होने पर स्वमति से।
2. तीर्थंकर, केवली आदि का प्रवचन सुनकर।
3. तीर्थंकर के प्रवचनानुसार उपदेश करने वाले विशिष्ट ज्ञानी के निकट में उपदेश आदि सुनकर।

(f) नारकी जीवों की इच्छा होते हुए भी उनके मनुष्य लोक में नहीं आ सकने के कोई दो कारण लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो कारण-

1. नरक गति में अत्यन्त तीव्र वेदना का वेदन करने से।
2. परमाधार्मिक नरकपालों द्वारा बार-बार ताड़ित-प्रताड़ित किये जाने से।
3. नरक गति सम्बन्धी असाता वेदनीय कर्म के क्षय नहीं होने से।
4. नरक गति सम्बन्धी आयुकर्म के क्षय नहीं होने से।

(g) छद्मस्थ जीव किन-किन 10 वस्तुओं को नहीं देख सकता है ?

उ. 1. धर्मास्तिकाय, 2. अधर्मास्तिकाय, 3. आकाशास्तिकाय, 4. अशरीरी जीव, 5. परमाणु पुद्गल 6, शब्द, 7. गन्ध, 8. वायु, 9. यह जिन (घाती कर्म क्षय करने वाला) होगा अथवा नहीं, 10. यह समस्त दुःखों का अंत करेगा अथवा नहीं।

(h) अनुभाव बंध को परिभाषित कीजिए।

कर्म पुद्गलों में निर्मित स्वभाव में तीव्रता-मन्दता आदि रूप में फलानुभव कराने वाली जो विशेषताएँ बंधती हैं, उन्हें अनुभाव बंध कहते हैं।

(i) 6 संहननों के नाम लिखिए।

6 संहनन- वज्र ऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका, सेवार्त्त।

(j) आदेय व अनादेय को परिभाषित कीजिए।

जिस कर्म के उदय से वचन बहुमान्य हों, वह आदेय नामकर्म एवं जिस कर्म के उदय से वचन बहुमान्य न हों, वह अनादेय नामकर्म है।

(k) प्रथम नारकी में समुच्चय से किन 19 प्रकृतियों का बंध नहीं होता है ?

वैक्रिय अष्टक, आहारक द्विक, जाति चौक, स्थावर चौक तथा आतप नाम, इन 19 प्रकृतियों का बंध नहीं होता है।

(l) तिर्यंच गति व मनुष्य गति में लब्धि अपर्याप्त का बंध स्वामित्व लिखिए।

गुणस्थान	संख्या	प्रकृति नम्बर	गाथा के शब्द	प्रकृतियाँ
1	109	(1-11)	जिण से नरय (11)	जिननाम, वैक्रिय अष्टक, आहारक द्विक को छोड़कर।

(m) षष्ठी विभक्ति से सम्बन्धित दूसरा नियम लिखिए।

हेतु (हेउ) शब्द के प्रयोग में जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है, वह और हेउ शब्द दोनों में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- अन्नस्स हेउस्स वसइ- अन्न प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है।

(n) अव्यय किसे कहते हैं ?

ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई परिवर्तन न हो और जो सदा एक से रहे अर्थात् सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगों में एक समान रहे, वे अव्यय कहलाते हैं।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) आचारांग सूत्र के चतुर्थ अध्ययन के तृतीय उद्देशक में साधक को क्या उपदेश दिया गया है ?

आचारांग सूत्र के चतुर्थ अध्ययन के तृतीय उद्देशक में साधक को उपदेश दिया गया है कि वह भाव-विशुद्धि द्वारा नये कर्मों के आगमन को रोकने के साथ-साथ पूर्वसंचित कर्मों का नाश करने के लिये यथाशक्य तप-साधना में निरत रहे।

(b) सच्चा मुनि कौन है ? आचारांग के पंचम अध्ययन के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

सभी प्राणी जीना और सुखी रहना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, अतः सच्चा मुनि वही है जो किसी जीव की हिंसा नहीं करता और हिंसाजन्य पाप से सदा दूर रहता है।

(c) ''भावना'' चूलिका में किसका वर्णन किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

भावना चूलिका में भगवान महावीर के गर्भावतरण, गर्भ-साहरण, जन्म, जन्मोत्सव, नामकरण, तीन नाम, माता-पिता-पितृत्व के नाम, बहिन, भाई, भार्या, पुत्री एवं दोहित्री के नाम, माता-पिता का स्वर्गवास, वर्षीदान और साधना का वर्णन किया गया है।

(d) **द्रव्य एवं भाव दिशा के नाम लिखिए।**

नोटः चार भेद, छह भेद, दस भेद, अठारह भेद- इन चारों में से कोई भी एक भेद मान्य-

चार- द्रव्य दिशा— पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

भाव दिशा— नरक गति, तिर्यञ्च गति, मनुष्य गति, देव गति।

छह- द्रव्यदिशा— पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊँची, नीची।

भाव दिशा— नरक, असन्नी तिर्यञ्च, सन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य, सन्नी मनुष्य, देव।

दस— द्रव्य दिशा— पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण + 4 अनुदिशाएँ (नैऋत्य, वायव्य, आग्नेय, ईशान) + ऊँची, नीची।

भाव दिशा— नरक, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, कर्म भूमि मनुष्य, अकर्म भूमि मनुष्य, अन्तर्द्वीप मनुष्य, असन्नी मनुष्य, देव।

अठारह— द्रव्य दिशा— पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण + 4 अनुदिशाएँ (नैऋत्य, वायव्य, आग्नेय, ईशान) इन आठों के मध्य की 8 विदिशा = 16 + ऊँची, नीची - 18

भाव दिशा— मनुष्य की चार - सम्मूर्च्छिम, कर्म भूमि, अकर्म भूमि, अन्तर्द्वीप।

तिर्यञ्च की चार— बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

स्थावर की चार— पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय।

वनस्पति की चार— अग्रबीज, मूलबीज, स्कन्ध बीज, पर्वबीज। ये 16 + नारकी + देवता = 18 भाव दिशा।

(e) **प्रमाद को परिभाषित कीजिए।**

आत्म-विस्मरण को प्रमाद कहते हैं। आत्म-विस्मरण से तात्पर्य कुशल कार्यों में अनादर, अकर्त्तव्य-कर्त्तव्य में असावधानी है। दूसरे शब्दों में कर्मबन्धन के जितने भी कार्य हैं, वे सभी प्रमाद हैं।

(f) **'स्त्यानगृद्धि' निद्रा को स्पष्ट कीजिए।**

जिस कर्म के उदय से जागृत अवस्था में सोचे हुए काम को निद्रावस्था में करने का सामर्थ्य प्रकट हो जाय, वह स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण है। इस निद्रा में स्वाभाविक बल से अनेक गुणा अधिक बल प्रकट होता है।

(g) **त्रस और स्थावर दशक की प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

त्रस - त्रस,बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशः कीर्ति।

स्थावर दशक- स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति।

(h) **आठ कर्मों की जघन्य स्थिति बन्ध के अधिकारी कौन-कौन होते हैं ? स्पष्ट कीजिए।**

ज्ञानावरणीय , दर्शनावरणीय, वेदनीय, नाम, गोत्र और अन्तराय, इन छः कर्मों की जघन्य स्थिति के अधिकारी दसवें गुणस्थावर्ती जीव हैं, मोहनीय के 9वें गुणस्थानवर्ती जीव तथा आयुष्य की जघन्य

स्थिति बंध के अधिकारी संख्यात वर्ष जीवी मनुष्य एवं तिर्यञ्च है।

(i) सभी निर्ग्रन्थों में लेश्या द्वार लिखिए।

1. पुलाक में तेजो, पद्म एवं शुक्ल तीन लेश्या पायी जाती हैं।

2. बकुश व प्रतिसेवना कुशील में भी तीन शुभ लेश्याएँ होती है।

3. कषाय कुशील में छहों तथा परिहार विशुद्धि चारित्र में तेजो आदि 3 लेश्या तथा सूक्ष्म संपराय चारित्र में 1 शुक्ल लेश्या होती है।

(j) व्युत्सर्ग के भेदों को समझाइए।

1.बाह्योपधि व्युत्सर्ग- धन, धान्य, मकान, क्षेत्र आदि बाह्य पदार्थों की ममता का त्याग करना 'बाह्योपधि व्युत्सर्ग' है।

2.आभ्यन्तरोपधि व्युत्सर्ग- शरीर की ममता का त्याग करना एवं काषायिक विकारों की तन्मयता का त्याग करना 'आभ्यन्तरोपधि व्युत्सर्ग' है।

(k) औदारिक मिश्र काय योग का बंध-स्वामित्व लिखिए।

गुणस्थान	संख्या	प्रकृति नम्बर	गाथा के शब्द	प्रकृतियाँ
समुच्चय बंध	114	(6-11)	आहार से नरय तक	आहारक द्विक, देवायु, नरक त्रिक को छोड़कर
1	109	(1-5)	जिण से विउ तक	जिननाम, देवद्विक और वैक्रिय द्विक को छोड़कर
2	94	(12-24, 49,50)	सुहुम से छेवट्ठं तक, तिरि नराउ ये 15 कम हुई	
4	75	+ (1-5)- (25-48)	जिण से विउ तक (+5) अण से तिरि दुग तक (- 24)	
विशेष- इस गुणस्थान में मनुष्य सम्बन्धी प्रकृति का बन्ध भी नहीं हो सकता। इसलिये (51 से 55) तक की 5 प्रकृतियों को छोड़कर 70 प्रकृतियों का बंध मानना अधिक उपयुक्त लगता है।				
13	1			साता वेदनीय का बन्ध

(l) तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या में समुच्चय बंध की प्रकृतियों की संख्या तथा उन-उन में छूटने वाली प्रकृतियाँ लिखिए।

1. तेजोलेश्या में गुणस्थान 7 (1-7) समुच्चय 111, (नरय, सुहुम, विगलत्रय) 9 कम। पहले गुणस्थान में 108 (आहारक द्विक, जिननाम को छोड़कर) शेष बंध स्वामित्व के समान

2. पद्म लेश्या में गुणस्थान 7 (1 से 7 तक) समुच्चय 108 (एकेन्द्रिय, थावर और आतप, ये तीन और कम हुई)। पहले गुणस्थान में 105 शेष बंध स्वामित्व के समान।

3. शुक्ल लेश्या में गुणस्थान 13 (1-13) समुच्चय बंध 104, (तिर्यञ्च त्रिक व उद्योत को छोड़कर)। पहले गुणस्थान में 101 (आहारक द्विक व जिननाम को छोड़कर), दूसरे गुणस्थान में 97 (नपुंसक चौक को छोड़कर) शेष बंध स्वामित्व के समान

(m) **अनाहारक मार्गणा का बंध-स्वामित्व लिखिए।**

गुणस्थान	संख्या	प्रकृति नम्बर	गाथा के शब्द	प्रकृतियाँ
समुच्चय बंध	112	(6-11, 49-50)	आहार में नरय तक, तिरि नराउ (8)को छोड़कर	
1	107	(1-5)	जिण से विउ (5)तक को छोड़कर	
2	94	औदारिक मिश्र काय योग के समान किन्तु देवता नरक के अपर्याप्त में भी अनाहारक काययोग होने से चौथे गुणस्थान में मनुष्य सम्बन्धी पाँच प्रकृतियों का बंध भी सम्भव है।		
4	75			
13	1	साता वेदनीय का बन्ध		

(n) **पाठ्य पुस्तक के आधार पर असमान स्वर सन्धि का नियम लिखते हुए इसके पाँच उदाहरण अर्थ सहित लिखिए।**

अ या आ वर्ण के बाद में इ अथवा उ वर्ण हो तो इ का ए तथा उ का ओ हो जाता है।

देस + इला = देसेला (देश की भूमि)

दिण + ईस = दिणेस (सूर्य)

सव्व + उदय = सव्वोदय (सर्वोदय)

दया + ऊण = दयोण(दया से हीन)

पर + उवयारं = परोवयारं (दूसरे का उपकार)

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) आचारांग में कितने उद्देशनकाल कहे गए हैं-
(क) 02 (ख) 25
(ग) 85 (घ) 18000 (ग)

(b) आचारांग में निम्न में से किस अध्ययन में मुख्य रूप से भगवान महावीर की साधना का वर्णन हैं-
(क) अवधानश्रुत (ख) उपधानश्रुत
(ग) व्यवहार श्रुत (घ) आचार श्रुत (ख)

(c) जीव अरूपी होने के साथ किस गति वाला होता है-
(क) प्रतिहत (ख) अप्रतिहत
(ग) प्रतिहत-अप्रतिहत (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं (ख)

(d) राजा परदेशी समय-समय पर किससे परामर्श करता था-
(क) जितशत्रु राजा (ख) सूर्यकान्त राजा
(ग) सूर्यकान्ता रानी (घ) चित्त सारथि (घ)

(e) जिसके उदय से निद्रा से जागना अत्यन्त कठिन हो, कौनसी निद्रा कहलाती है-
(क) निद्रा (ख) स्त्यानगृद्धि
(ग) निद्रा-निद्रा (घ) प्रचला-प्रचला (ग)

(f) संज्वलन कषाय किसका घात करता है-
(क) सामायिक चारित्र (ख) यथाख्यात चारित्र
(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र (घ) परिहारविशुद्धि चारित्र (ख)

(g) भाव की विशुद्धि है-
(क) मार्दव (ख) क्षमा
(ग) आर्जव (घ) शौच (ग)

(h) सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च तथा मनुष्य कौनसी आयु का बन्ध करते हैं-
(क) नरकायु (ख) तिर्यंचायु
(ग) मनुष्यायु (घ) देवायु (घ)

(i) सातवीं नारकी में समुच्चय बन्ध कितनी प्रकृतियों का होता है-
(क) 100 (ख) 99
(ग) 101 (घ) 96 (ख)

(j) 'अच्छ' क्रिया का हिन्दी अर्थ होता है-
(क) उठना (ख) बैठना
(ग) ढकना (घ) चलना (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) अर्थात्मक ग्रन्थ के प्रणेता तीर्थंकर हैं। (हाँ)
(b) द्वादशांगी त्रिपदी का विस्तार है, इसलिए वह गणधरकृत भी है। (हाँ)
(c) वर्तमान में दोनों श्रुतस्कन्ध रूप आचारांग का पद परिमाण 2600 श्लोक प्रमाण है। (नहीं)
(d) दर्शन या वाणी से दूसरों को पराजित कर देने वाला कर्म पराघात है। (हाँ)
(e) अन्तराय कर्म के कारण अलाभ परीषह होता है। (हाँ)
(f) ज्ञान, दर्शन, चारित्र और उपचार, ये व्यत्सर्ग तप के चार भेद हैं। (नहीं)
(g) पाँच अनुत्तर विमान में केवल चौथा गुणस्थान पाया जाता है। (हाँ)
(h) तेउकाय, वायुकाय में प्रथम गुणस्थान में 101 प्रकृतियों का बन्ध होता है। (नहीं)

(i) औदारिक मिश्र काय योग में तेरहवें गुणस्थान में 75 प्रकृतियों का बन्ध होता है। (नहीं)

(j) विषय के बारे में, अर्थ में तथा समय बोधक शब्दों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	बोद्ध	(क) तीर्थंकर	त्रिपिटक
(b)	पारसी	(ख) आम्नाय	अवेस्ता
(c)	ईसाई	(ग) शैक्ष	बाईबिल
(d)	इस्लाम	(घ) अप्रमत्त संयत	कुरान
(e)	धर्मध्यान	(च) त्रिपिटक	अप्रमत्त संयत
(f)	नवदीक्षित अध्ययनशील साधु	(छ) अवेस्ता	शैक्ष
(g)	स्वाध्याय का एक भेद	(ज) बाईबिल	आम्नाय
(h)	आठ प्रत्येक प्रकृति में से एक	(झ) 13	तीर्थंकर
(i)	आहारक में गुणस्थान	(य) कुरान	13
(j)	क्षायिक में गुणस्थान	(र) 11	11

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	हम अंग बाह्य आगमों की रचना करते हैं।	स्थविर
(b)	मैं व्यक्ति के सुखात्मक एवं दुःखात्मक जीवन का आधार रूप बन्धन हूँ।	कर्मबंध
(c)	जैसे अग्नि जीर्ण लकड़ियों को नष्ट कर देती है, उसी प्रकार व्यक्ति मुझे नष्ट कर देता है।	राग-द्वेष
(d)	मैं दिशा, अनुदिशा और विदिशाओं में संचरण करने वाली परिणामी और स्वभाव से शाश्वत आत्मा में विश्वास करने वाला हूँ।	आत्मवादी
(e)	मैं एक ऐसा निर्ग्रन्थ हूँ, जिसमें सर्वज्ञता प्रकट हो गई है।	स्नातक
(f)	मैं एक ऐसा द्वीप हूँ, जिसमें जम्बूद्वीप, धातकीखण्डद्वीप और पुष्करवरार्धद्वीप निहित है।	अढ़ाई द्वीप
(g)	मैं दर्शन या वाणी से दूसरों को पराजित कर देने वाला नाम कर्म का एक भेद हूँ।	पराघात
(h)	मैं एक ऐसी उत्कृष्ट पुण्य प्रकृति हूँ, जिसका बंध तिर्यञ्च गति में होता ही नहीं है।	तीर्थंकर नाम
(i)	मैं ज्ञान का एक भेद हूँ, जिसमें कुल दो गुणस्थान पाए जाते हैं।	केवल ज्ञान
(j)	मैं ऐसी लेश्या हूँ, जिसमें सात गुणस्थान एवं समुच्चय बन्ध 108 प्रकृतियों का होता है।	पद्म लेश्या

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:- **12x2=(24)**

(a) आचारांग को अंगों के क्रम में प्रथम स्थान देने का क्या कारण है ?

उ. आचारांग में मोक्ष के उपायों का प्रतिपादन किया है और यही प्रवचन का सार है।

(b) किस मुनि के लिए एकाकी विचरण वर्जनीय बताया है ?

उ. जो वय एवं ज्ञान की दृष्टि से अपरिपक्व अथवा परिषहों को सहन करने में सक्षम न हो।

(c) व्यक्ति जन्म-मरण और संसार के दुःखों की चक्की में क्यों निरन्तर पिसता रहता है ?

उ. मोह में आसक्त व्यक्ति न तो सत्य मार्ग को देख सकता है और ना प्रशस्त पथ पर चलकर शान्ति के स्थल पर पहुँच सकता है।

(d) हिंसा का मूल क्या है ?

उ. मनुष्य अपने दुःखों को तो अनुभव कर ही लेता है, पर दूसरों के दुःखों के प्रति वह संवेदनशील प्रायः नहीं हो पाता। यही हिंसा का मूल है।

(e) 'जे गुणे से आवट्टे जे आवट्टे से गुणे' इसका अर्थ लिखिए।

उ. जो दुश्चरित्रता है, वह अशांति में चक्कर काटता है, जो चक्कर काटता है वह दुश्चरित्रता है।

(f) आत्मा के साथ बन्ध को प्राप्त होने वाले कर्म स्कन्ध कैसे होते हैं ?

उ. आत्मा के साथ बंध को प्राप्त करने वाले कर्म स्कन्ध सूक्ष्म, स्थिर एवं अनन्तानन्त प्रदेशों वाले होते हैं।

(g) शुभ व शुभग में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उ. जिस कर्म के उदय से नाभि से ऊपर के अवयव श्रेष्ठ हो, उसे शुभनामकर्म तथा जिस कर्म के उदय से बिना किसी उपकार के जो सबको प्रिय लगे, वह सुभग नामकर्म है।

(h) ऐसी कौनसी उत्तर प्रकृतियाँ है जिनका परस्पर संक्रमण संभव नहीं हैं ?

उ. दर्शन मोहनीय-चारित्र मोहनीय, आयुष्य कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ।

(i) 4,5,6 नरक में किन-किन गुणस्थानों में कितनी-कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है ?

उ. समुच्चय बंध-100 प्रकृतियों का

गुणस्थान	संख्या
1	100
2	96
3	70
4	71

(j) असन्नी में कौनसे गुणस्थान पाये जाते हैं तथा उनमें कितनी-कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है?

उ. असन्नी में गुणस्थान-2 (1-2) पहले में 117 का बंध, दूसरे में 101 का बंध।

(k) 'गाय में शक्ति होती है' इस वाक्य का प्राकृत भाषा में रूपान्तर कीजिए।

उ. धेणूअ सत्ती हवइ।

(l) 'स्वामी का पुत्र जागता है' इस वाक्य का प्राकृत भाषा में रूपान्तर कीजिए।

उ. सामिस्स पुत्तो जग्गइ।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) कौनसा साधक चार घाती कर्मों का क्षय कर अन्त में जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो निरंजन-निराकार, सच्चिदानन्द स्वरूप सिद्धत्व को प्राप्त करता है ?

उ. जो साधक जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्ररूपित संयमधर्म का अपने आचार्य की आज्ञानुसार अप्रमत्तरूप से निरन्तर पालन करता है और सब प्रकार के कर्मबन्धों के भाव-स्त्रोतों से पूरी तरह बचते हुए साधनारत रहता है।

(b) ''अरति आउट्टे से मेधावी खणंसि मुक्के'' इसका अर्थ लिखिए।

उ. जो बैचेनी को समाप्त कर देता है वह प्रज्ञावान होता है। ऐसा व्यक्ति पल भर में बंधन रहित हो जाता है।

(c) ''अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे, पलिछिंदियाणं णिक्कम्मदंसी'' का अर्थ लिखिए।

उ. हे धीर! तू अग्र और मूल को छोड़ दे। राग-द्वेषादि बन्धनों को या कर्मों को सर्वथा छिन्न करके आत्मा निष्कर्मदर्शी हो जाता है।.

(d) नारकी जीवों के मनुष्य लोक में नहीं आने के क्या-क्या कारण हैं ? समझाइए।

उ. 1. नरक गति में अत्यन्त तीव्र वेदना का वेदन करने से।

2. परमाधार्मिक नरकपालों द्वारा बार-बार ताड़ित-प्रताड़ित किये जाने से।
3. नरक गति सम्बन्धी असाता वेदनीय कर्म के क्षय नहीं होने से।
4. नरक गति सम्बन्धी आयुकर्म के क्षय नहीं होने से।

(e) छद्मस्थ जीव कौनसी दस वस्तुओं को देख नहीं पाता ?

उ. 1. धर्मास्तिकाय 2. अधर्मास्तिकाय 3. आकाशास्तिकाय 4. अशरीरी जीव 5. परमाणु पुद्गल 6. शब्द 7. गन्ध 8. वायु 9. यह जिन (घातीकर्म क्षय करने वाला) होगा अथवा नहीं, 10. यह समस्त दुःखों का अन्त करेगा अथवा नहीं।

निम्न सूत्रों की व्याख्या कीजिए-

(f) मत्यादीनाम्।

उ. मति आदि पाँच ज्ञानों के आवरण मति ज्ञानावरण, श्रुत ज्ञानावरण, अवधि ज्ञानावरण, मनःपर्याय ज्ञानावरण तथा केवल ज्ञानावरण, ये पाँच उत्तर प्रकृति-भेद हैं।

(g) स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा परीषहजय चारित्रैः।

उ. वह संवर गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय और चारित्र से होता है।

(h) मार्गाऽच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।

उ. रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग से च्युत न होने एवं कर्मों की निर्जरा के लिए आत्म-साधना में आने वाली अनुकूल-प्रतिकूल बाधाओं को समभावपूर्वक सहन करना 'परीषह' है।

(i) तदनन्तर-मूर्ध्व-गच्छत्यालोकान्तात्।

उ. तदनन्तर अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के क्षय होने पर मुक्त जीव लोकान्त तक उर्ध्वगमन करता है।

(j) औदारिक मिश्रकाय योग में पाए जाने वाले गुणस्थान एवं बन्ध योग्य प्रकृतियाँ लिखिए।

उ.

गुणस्थान	संख्या	प्रकृतियाँ
समुच्चय बंध	114	आहारक द्विक, देवायु, नरक त्रिक को छोड़कर
1	109	जिननाम, देवद्विक और वैक्रिय द्विक को छोड़कर
2	94	सुहुम से छेवट्टं तक, तिरि नराउ ये 15 कम हुई
4	75	जिण से विउ तक (+5) अण से तिरि दुग तक (-24)

नोटः- इस गुणस्थान में मनुष्य सम्बन्धी प्रकृति का बंध भी नहीं हो सकता। इसलिए (51 से 55) तक की पाँच प्रकृतियों को छोड़कर 70 प्रकृतियों का बंध मानना अधिक उपयुक्त लगता है।

13	1	साता वेदनीय बंध।

(k) मनुष्य लब्धि पर्याप्तक में पाए जाने वाले गुणस्थान एवं बन्ध योग्य प्रकृतियाँ लिखिए।

उ. समुच्चय व 1, 2 और 6 से 13 गुणस्थान तक - समुच्चय बन्ध स्वामित्व के समान।

गुणस्थान	संख्या	प्रकृतियाँ
3	69	तिर्यञ्च लब्धि पर्याप्तक के समान
4	71	जिननाम व देवायु बढ़ी
5	67	अप्रत्याख्यानी चौक घटी।

(l) सन्धि किसे कहते हैं ? सन्धि के प्रकार लिखिए।

उ. जो अक्षरों के परस्पर मिलने से उनके आकार और ध्वनि में जो परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि के प्रकार- 1. स्वर 2.लोप 3. अव्यय।